Aarti Kunj Bihar Ki

आरती कुंजबहिारी की,
श्री गरिधिर कृष्ण मुरारी की ॥
आरती कुंजबहिारी की,
श्री गरिधिर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में बैजंती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकाला,
नंद के आनंद नंदलाला ।
गगन सम अंग कांति काली,
राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमाली
भ्रमर सी अलक,
कस्तूरी तलिक,
चंद्र सी झलक,
ललति छवि श्यामा प्यारी की,
श्री गरिधिर कृष्ण मुरारी की ॥ x2
॥ आरती कुंजबहिारी की...॥

कनकमय मोर मुकुट बलिसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरचंग,
मधुर मरिदंग,
ग्वालनि संग,
अतुल रति गोप कुमारी की,
श्री गरिधिर कृष्णमुरारी की ॥ x2
॥ आरती कुंजबहिारी की...॥

जहां ते प्रकट भई गंगा,
सकल मन हारणि श्री गंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा
बसी शवि सीस,
जटा के बीच,
हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की,
श्री गरिधिर कृष्णमुरारी की ॥
॥ आरती कुंजबहिारी की...॥ x2

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,
बज रही वृंदावन बेनू ।
चहुं दसि गोपि ग्वाल धेनू
हंसत मृदु मंद,
चांदनी चद,
कटत भव फंद,
टेर सुन दीन दुखारी की,
श्री गरिधिर कृष्णमुरारी की ॥
॥ आरती कुंजबहिारी की...॥ x2

आरती कुंजबहिारी की,

श्री गरिधिर कृष्ण मुरारी की ॥
आरती कुंजबिहारी की,
श्री गरिधिर कृष्ण मुरारी की ॥